निरखत जिनचन्द्र-वदन स्व-पद सुरुचि आई।

प्रगटी निज-आन की पिछान ज्ञान-भान की।
कला उद्योत होत काम-जामनी पलाई।। निरखत.।।१।।

शाश्वत आनन्द स्वाद पायौ विनस्यो विषाद।
आन में अनिष्ट-इष्ट कल्पना नसाई।। निरखत.।।२।।

साधी निज साध की समाधि मोह-व्याधि की।
उपाधि को विराधि कै आराधना सुहाई।। निरखत.।।३।।

धन दिन छिन आज सुगुनि चिंते जिनराज अबै।
सुधरो सब काज 'दौल' अचल रिद्धि पाई।। निरखत.।।४।।